P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-2* October- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

गॉधीवादी अर्थव्यवस्था

मंजुलता कश्यप
सहायक प्राध्यापक,
अर्थशास्त्र विभाग,
ठाकुर छेदीलाल शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय जांजगीर, जांजगीर, चाम्पा (छ.ग.) भारत

सारांश

महात्मा गांधी की अर्थशास्त्रीय विचारधारा इस भारतीय धारणा से अनुप्राणित है कि आर्थिक क्रियाकलापों का केन्द्र धन नहीं होता बल्कि व्यक्ति होता है। गॉधी जी के अनुसार अर्थशास्त्र के क्षेत्र में अहिंसा के कानून को ले जाने का अर्थ है – उस क्षेत्र में नैतिक मूल्यों को दाखिल करना। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का नियमन करने में इन नैतिक मूल्यों का ध्यान रखना जरूरी है। गॉधी जी आर्थिक क्षेत्र में नैतिक एवं धार्मिक मूल्यो की पुनर्स्थापना चाहते थे जिससे प्रत्येक व्यक्ति को आर्थिक न्याय प्राप्त हो सके।

समाज में सामाजिक एवं आर्थिक न्याय की स्थापना से तात्पर्य है कि सभी व्यक्ति सामाजिक दृष्टि से समान समझे जाए। कोई भी अपने व्यवसाय की दृष्टि से उच्च या निम्न न माना जाए। सभी व्यक्तियों को अपने जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति का अधिकार मिले। गॉधी जी ने इस लक्ष्य को दृष्टिगत रखते हुए संरक्षकता सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

गॉधी जी चाहते थे कि ऐसी अर्थव्यवस्था स्थापित की जाए जो सभी को आर्थिक समानता प्रदान करे। गॉधी जी भारतीय अर्थव्यवस्था का पुनर्निर्माण चाहते थे लेकिन पश्चिम के आर्थिक सिद्धांतो के आधार पर नहीं अपितु भारतीय सभ्यता और संस्कृति के पुनर्जीवन के माध्यम से। इसके लिए उन्होने भारतीय जनता को स्वदेशी का मूल मंत्र दिया। वास्तविक अर्थो में वे भविष्यदृष्टा थे, जिन्होने यह महसूस कर लिया था कि यदि मानव जाति को ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की संकल्पना को स्वप्नलोक से उतार कर यथार्थ स्वरूप प्रदान करना है तो मानव समाज की निम्नतम इकाई ग्राम को इतना सशक्त और सुदृढ़ बनाना होगा कि वह स्वयं पूर्ण और स्वावलंबी बन सके।

मुख्य शब्द : गॉधीवादी अर्थव्यवस्था, सर्वोदय, वस्तु विनिमय अर्थव्यवस्था, न्यासिता का सिद्धांत, प्रासंगिकता

प्रस्तावना

गॉधीवादी अर्थव्यवस्था एक शोषण रहित आत्मनिर्भर तथा विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था की भावना से उत्प्रेरित था, जिसमें ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सर्वांगीण विकास का लक्ष्य सर्वोपरि था। गॉधी जी आर्थिक औद्योगीकरण, केन्द्रीयकरण तथा राज्य शक्ति के ध्रुवीकरण से संशकित थे। उत्तरोत्तर शहरीकरण एवं ग्राम्य अवसान से गॉधीजी ने माना कि भारत की सांस्कृतिक गरिमा पर आघात हो रहा है, इसलिए गॉधी जी ने विकेन्द्रित ग्राम्याधारित, त्यागपरक अर्थतंत्र को प्राथमिकता दी।

महात्मा गांधी ने यह बताया था कि अर्थशास्त्र का उद्देश्य मनुष्य की सभ्यता का अध्ययन करना, उसकी गरीबी मिटाना, उसमें सदाचार की भावना सृजित करना तथा समाज से बुराईयों को दूर करना है।

महात्मा गॉधी – ''मेरे ख्याल में हिन्दुस्तान की और सारे संसार की अर्थव्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जिसमें बिना खाने और बिना कपड़े के कोई भी रहने न पाए। जो भूखे और बेकार है उन्हे भगवान सिर्फ एक ही विभूति के रूप में दर्शन देने की हिम्मत कर सकता है और वह विभूति है काम और अन्न के रूप में वेतन का आश्वासन।''

गॉधीवादी अर्थव्यवस्था में अर्थशास्त्र और नैतिकता को पृथक नही किया गया है तथा यह भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप भी है। यह अर्थव्यवस्था, पर्यावरण एवं प्राकृतिक स्त्रोतों के दोहन में संतुलन को दृष्टिगत रखने के कारण

अपेक्षाकृत स्थायी है। इस आध्यात्मवादी एवं भौतिकवादी व्यवस्थाओं के बीच का मार्ग है। गॉधी जी का लक्ष्य पूंजीवाद की समाप्ति एवं शोषणमुक्त समाज का निर्माण करना है। गॉधी जी ने ट्रस्टीशिप एवं हृदय परिवर्तन द्वारा लक्ष्य प्राप्ति का समर्थन किया है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. गॉधीवादी अर्थव्यवस्था का अध्ययन करना।
2. वर्तमान संदर्भ में गॉधीवादी अर्थव्यवस्था की प्रासंगिकता का अध्ययन।

अध्ययन विधि

द्वितीयक समंको पर आधारित।

साहित्यावलोकन

पवन कुमार अग्रवाल[1] के अनुसार – राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ती बेरोजगारी आर्थिक विषमताओं से उभरती नई कठिनाईयॉ, आपसी वर्ग संघर्ष एवं अस्थिरता में गॉधी दर्शन अधिक प्रासंगिक है, क्योंकि यह समस्याओं के समाधान में सक्षम है। अमरनाथ दत्त गिरी[2]के अनुसार–गॉधी जी के नैतिक मूल्यो और आर्थिक सिद्धांतो का ध्येय था एक सर्वोदयी समाज की स्थापना। हरदयाल[3] के अनुसार– गॉधी जी कुटीर उद्योगों के पक्षधर थे। चरखा और खादी कुटीर उद्योगों के प्रतीक थे। कन्हैया त्रिपाठी[4] के अनुसार – सच्चा अर्थशास्त्र सामाजिक न्याय की हिमायत करता है। वह समान भाव से सबकी भलाई का जिसमें कमजोर भी शामिल है, प्रयत्न करता है। यदि समग्रता में देखे तो उनके चार फार्मूलें – अहिंसा, ट्रस्टीशिप, विकेन्द्रीकरण और अंतिम व्यक्ति आर्थिक मॉडल के चाबी है। लक्ष्मी दास[5] के अनुसार –गॉधी विचार आज भी प्रासंगिक है, उसे न्यायोचित समय देने की आवश्यकता है। यदि स्किल डवलपमेन्ट कार्य को गॉधी विचार के साथ जोड़कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था का माध्यम बनाया जा सके तो क्रांतिकारी परिवर्तन हो सकते है। होशियार सिंह[6] के अनुसार – ग्राम स्वराज में अंतिम सत्ता व्यक्ति के हाथ में रहेगी। गॉधी जी के अनुसार समाज व्यवस्था जितनी स्वावलंबी और विकेन्द्रित होगी, उतनी ही वह संपोषक संतुलित और सार्थक होगी। डॉ. रवीन्द्र कुमार[7] के अनुसार –खादी एक ओर दीन जन के सम्मान के साथ रोजगार जुटाने का अच्छा साधन है तो दूसरी ओर यह अहिंसक साधनों द्वारा स्वराज्य प्राप्ति का अतिरिक्त तथा अति मूल्यवान मार्ग भी है।

गॉधीवादी अर्थव्यवस्था

गांधीवादी अर्थव्यवस्था नैतिकता पर आधारित है। सत्य और अहिंसा उसके अस्त्र है और मानव मात्र का कल्याण ध्येय। गांधी जी के अनुसार अर्थशास्त्र का निर्माण व्यक्ति एवं समाज के हित के लिए हुआ है। इसलिए अर्थशास्त्र पर नीतिशास्त्र का नियंत्रण रहना चाहिए। गांधी जी की संपूर्ण अर्थव्यवस्था का चिन्तन उनकी आध्यात्मिक एवं नैतिक मान्यताऍ है। गांधीवादी अर्थव्यवस्था आर्थिक समानता पर बल देती है। गांधीवादी अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषताऍ जो हमें नैतिकता के आधार पर अर्थव्यवस्था को अमल में लाने देती है उनमें – स्थायित्व की अर्थव्यवस्था, लघुता में सौन्दर्य, वस्तु विनिमय अर्थव्यवस्था, नीतिशास्त्र की प्रधानता, ग्रामाधारित औद्योगीकरण, अपरिग्रह की अर्थव्यवस्था, आर्थिक समानता, आर्थिक न्याय, सहयोग, व सहकारिता, खादी का अर्थशास्त्र आदि प्रमुख है।

गांधी जी के अनुसार – एक ऐसी अर्थव्यवस्था की स्थापना की जाए जो जनता की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने के साथ–साथ उसका सर्वांगीण विकास कर सके और समाज में आर्थिक समानता की स्थापना की जा सके। गांधी जी के अनुसार अर्थशास्त्र के क्षेत्र में अहिंसा के कानून को ले जाने का अर्थ है – उस क्षेत्र में नैतिक मूल्यों को दाखिल करना। तब ही हम स्थायित्व की अर्थव्यवस्था को प्राप्त कर सकेगें। लघुता में सौन्दर्य गांधी जी की अर्थव्यवस्था की अद्वितीय विशेषता है। हमें ऐसी अर्थव्यवस्था को अपनाना होगा, जिसमें लघु स्तर पर उत्पादन हो, जो अपेक्षाकृत अहिंसक हो तथा मानवीय मूल्यों पर आधारित हो। मानवीय तकनीक के अंतर्गत उत्पादन लघु स्तर पर किया जाता है तथा जनता की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए किया जता है। इसमें पर्यावरण से समन्वय बना रहता है। व्यक्ति को अपनी दक्षता दिखाने का अवसर अधिक मिलता है तथा मानवीय मूल्यों के अनुरूप भी होती है। हमें कृषि आधारित औद्योगिक संरचना की आवश्यकता है जिसमें श्रम प्रधान तकनीक हो। लघु स्तरीय उत्पादन से विकास संभव है।

ग्रामाधारित औद्योगीकरण में कृषि आधारित औद्योगिक संरचना की आवश्यकता है। गॉवों को आत्म निर्भर बनना चाहिए चूंकि एक गांव स्वयं में पूर्ण निर्भर नही हो सकता है अतः सामूहिक रूप से गांव आत्मनिर्भर होंगे। आत्म निर्भरता की आधारशिला ग्रामोद्योग है। मशीनीकरण वही ठीक है जहॉ वांछित कार्य को करने के लिए आवश्यक हाथ नही है। व्यक्ति और उसका कल्याण ही सर्वोपरि है। अतः ग्रामाधारित औद्योगीकरण आज की आवश्यकता है।

गॉधी जी धन का समान वितरण चाहते थे जिससे सभी व्यक्तियों के मध्य पूर्ण आर्थिक समानता के

सामाजिक आदर्श को प्राप्त किया जा सके। आर्थिक समानता का अर्थ यह है कि सभी व्यक्तियों के पास इतनी संपत्ति अवश्य हो जिससे वे अपनी आवश्यकताएँ पूरी कर सके। इसके लिए समाज की संरचना में परिवर्तन करना होगा, यह परिवर्तन अहिंसा द्वारा लाया जा सकता है। संपूर्ण समाज की रचना यदि इसी प्रकार की होगी तो आर्थिक समानता स्वतः ही स्थापित हो जायेगी। आर्थिक समानता लाने के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्तियों की न्यूनतम आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए जीवन में परिवर्तन लाकर अपनी आवश्यकताओं में परिवर्तन लाना होगा, इसलिए उन्होने लघु एवं कुटीर उद्योग धंधो को महत्व दिया। समाज में आर्थिक समानता की स्थापना के लिए ट्रस्टीशिप एक अहिंसक सिद्धांत है। यह सिद्धांत आपसी संबंधो पर आधारित है। जिसमें प्रत्येक का एक दूसरे पर विश्वास होता है और एक दूसरे के हितों की रक्षा का प्रयास किया जाता है।

गांधी जी के अनुसार – आर्थिक न्याय का अर्थ है कि समाज प्रत्येक व्यक्ति की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति के नैतिक दायित्व को निभाये। समाज को आर्थिक न्याय की स्थापना में सफलता तब ही मिल सकती है जब सभी व्यक्ति समाज के प्रति अपने आर्थिक कर्त्तव्यों का पालन करे। एक व्यक्ति का हित सभी व्यक्तियों के हित में निहित है अर्थात् जिससे सबकों लाभ हो, वही अच्छी अर्थव्यवस्था है। आर्थिक न्याय की स्थापना के लिए जरूरी है कि सभी व्यक्ति वितरण के प्राकृतिक सिद्धांत के अनुसार अपना आर्थिक जीवन व्यतीत करे। वे चाहते थे कि ऐसी अर्थव्यवस्था स्थापित की जाए जो सभी को आर्थिक समानता प्रदान करे। वितरण के प्राकृतिक सिद्धांत से गांधी जी का आशय यह है कि प्रकृति प्रत्येक आवश्यक वस्तु को इतनी मात्रा में जरूर उत्पन्न करती है जितनी मानव समाज की आवश्यकता की पूर्ति के लिए जरूरी होती है, किन्तु लालच की पूर्ति करने में स्वयं को असमर्थ पाती है। वितरण के प्राकृतिक सिद्धांत के अनुसार शारीरिक श्रम ही वास्तविक जीवन है। व्यक्ति को अपनी आर्थिक आवश्यकताओं को यथासंभव सीमित रखना चाहिए। व्यक्तियों को आवश्यक वस्तुओं का उपभोग तो करना चाहिए किन्तु उनका संग्रह नहीं करना चाहिए। इन सब कर्त्तव्यों के पालन से समाज में आवश्यक वस्तुओं का कृत्रिम अभाव नही होगा और सहज रूप से आर्थिक न्याय की स्थापना में सफलता मिलेगी।

गांधी जी वस्तु विनिमय अर्थव्यवस्था पर बल देते है। वस्तु विनिमय का मूल सिद्धांत यह है कि उपभोक्ता और उत्पादक के बीच की कड़ी को कम से कम करके उन्हे नजदीक लाया जाए। मूल्य व्यवस्था ने दूरी बढ़ा दी है। स्थानीय उद्योगों को सहारा देकर हम इस दूरी को कम कर सकते है। वस्तु विनियम अर्थव्यवस्था हमारे देश की आर्थिक दुरावस्था का उपचार करने में समर्थ है व मुद्रा स्फीति भी दूर हो सकती है। गॉधी जी के अनुसार – पूर्ण अपरिग्रह अव्यवहारिक है। लेकिन यदि हम समय समय पर अपरिग्रह के क्षेत्र में प्रयत्न करे तो हम एक सीमा तक समाज में वह समता प्राप्त कर सकते है जो अन्य साधनों से प्राप्त नहीं की जा सकती। सहयोग व सहकारिता ग्रामीण जीवन की आत्मा है। गॉधी जी के अनुसार सहयोग की अवधारणा यह है कि भूमि पर सभी का सहकारी अधिकार होगा जिससे श्रम, पूंजी तथा अन्य उपकरणो की बचत होगी, जिससे गरीबी दूर होगी। अहिंसक सहकारिता – प्रेम के द्वारा ही सहयोग को प्राप्त किया जा सकता है जिससे द्वारा गॉव की स्वार्थपरता को सहयोगी व सहकारी अर्थव्यवस्था में परिणित कर ग्राम की मानव शक्ति, पूंजी व प्राकृतिक स्त्रोतो का उचित उपयोग कर उन्हे सुखी जीवन प्रदान किया जा सके।

गांधी जी के लिए खादी का अर्थ है – बंधुत्व की भावना तथा ऐसी प्रत्येक वस्तु का परित्याग, जिससे हमारे साथियों को क्षति पहुंचती हो। खादी मनोवृत्ति का अर्थ है – जीवन के आवश्यक पदार्थों के उत्पादन और विवरण का विकेन्द्रीकरण। खादी का मूल उद्देश्य प्रत्येक गॉव को अपने भोजन एवं कपड़ों में स्वावलम्बी बनाना है।

गॉधी जी के आर्थिक दर्शन की यह महत्वपूर्ण विशेषता रही है कि उन्होने अपनें संपूर्ण आर्थिक दर्शन को एक ऐसा प्रबल और सशक्त आधार प्रदान किया है कि आज तक उसमें कही कोई न्यूनता या अल्पता प्रतीत नही होती। गॉधी जी ने एक ओर स्वदेशी तथा चरखे को अपनाया तो दूसरी ओर मशीनीकरण का तीव्र विरोध किया। गांधी जी ने अहिंसा पर आधारित अर्थव्यवस्था पर विशेष बल दिया। केन्द्रीयकरण से शोषण और असमानता में वृद्धि होती है अतः केन्द्रीयकरण अहिंसक समाज की रचना का विरोधी है। गॉधी जी के अनुसार केन्द्रीयकरण जीवन को अत्यधिक जटिल बनाता है और व्यक्ति की पहल करने की क्षमता को समाप्त कर देता है। जिसके परिणामस्वरूप स्वशासन के अवसरो में कमी आती है और मनुष्य की नैतिक भावना कुंठित होती है। अपने मौलिक रूप में स्वदेशी आंदोलन भारतीय अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवन प्रदान करने के लिए किया गया था। गॉधी की आर्थिक समानता का विचार उनके अहिंसा के सिद्धांत पर आधारित है। गांधी जी की मान्यता थी कि आय में होने वाली असमानता एक प्रकार की हिंसा है। क्योंकि इसके परिणामस्वरूप, अधिसंख्य व्यक्ति जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते। संपत्ति कुछ गिने चुने व्यक्तियों

में केन्द्रित हो जाती है। परिणामस्वरूप अधिसंख्य व्यक्तियों को जो कष्ट सहन करना होता है वह एक प्रकार से निकृष्ट तरीके की हिंसा है। अतः गांधी जी समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता को समाप्त करना चाहते थे। ट्रस्टीशिप के सिद्धांत के माध्यम से गांधी जी एक नैतिक एवं अहिंसक अर्थव्यवस्था की स्थापना करना चाहते थे। जो समाज में वर्गो के संघर्ष पर नही अपितु उनके परस्पर सहयोग एवं समन्वय तथा सामंजस्य पर आधारित है। जो मूलतः अहिंसा में विश्वास रखती हो और अर्थव्यवस्था में मानवोचित गरिमा और उसके महत्व की पुनर्स्थापना चाहती हो। गांधी जी के अनुसार यह सब न्यासिता के सिद्धांत पर आधारित अर्थव्यवस्था में ही संभव है।

प्रासंगिकता

गॉधी जी जैसी महामानव की दूर–दृष्टि आज उत्तर आधुनिक युग की आवश्यकता बन गई है। आज समाज किसी न किसी हद तक एक द्वंद से घिरा है और व्यक्ति को मुक्ति तथा सुरक्षा की तलाश है इस तलाश का मार्ग भी कहीं न कहीं, किसी न किसी हद तक गॉधी मार्ग से होकर निकलता है।

ग्रामीण विकास के प्रति गॉधीजी समग्र दृष्टिकोण के पक्षधर थे। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर, राजनीतिक रूप से स्वशासित, सामाजिक रूप से समानता मूलक और शारीरिक श्रम को गरिमा प्रदान करने तथा ग्रामीण संस्कृति का संरक्षण करने वाले गांवो का निर्माण गॉधी जी का लक्ष्य था।

गॉधी जी ने विकेन्द्रित शासन व्यवस्था को सर्वोत्तम बताया था। इस दृष्टि से पंचायतीराज व्यवस्था वास्तव में सत्ता के विकेन्द्रीकरण तथा सत्ता में आम लोगों की सहभागिता का श्रेष्ठ विकल्प है। अतः गॉधी जी द्वारा बताए गए मार्ग पर अर्थव्यवस्था में विकेन्द्रीकरण, योजनाओं एवं कार्यक्रमों में स्थानीय आवश्यकताओं की प्राथमिकताओं को निर्धारित किया जाए तो समाज एवं अर्थव्यवस्था का सर्वांगीण विकास संभव हो सकता है। गॉधी जी ने प्राकृतिक संपदाओं को सोच विचार कर उपयोग में लाने की सलाह दी थी, उनका विचार आज सत्य प्रतीत हो रहा है। शिक्षा के क्षेत्र मे गांधी जी के विचार व्यवहारिकता के निकट है। अतः वर्तमान शिक्षा को व्यवसाय से जोड़ने की आवश्यकता है और प्राथमिक एवं बुनियादी शिक्षा के प्रसार पर ध्यान देने की जरूरत है।

गॉधीजी के सर्वोदय का अर्थ व्यक्ति, समाज और पूरे राष्ट्र के विकास से लिया है। उन्होने सामाजिक समरसता की स्थापना के लिए ही सर्वोदय एवं अंत्योदय की परिकल्पनाएं प्रस्तुत की। सर्वोदय अर्थात् सकबा उदय, अंत्योदय अर्थात् अंतिम व्यक्ति का उदय/गॉधी जी का विश्वास था कि जब तक विश्व में एक भी व्यक्ति भूखा है तब तक उन्हें भर पेट भोजन करने का अधिकार नहीं है। गॉधी जी के सर्वोदय दर्शन में व्यक्तिगत स्वतंत्रता, न्याय, समानता एवं बंधुत्व जैसे आदर्श सम्मिलित है।

उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद जैसी बुराईयों की जड़ केन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था है। उत्पादन को छोटे–छोटे पैमानों पर अनेक स्थानों पर चालू किया जाए।

मशीनीकरण पर आधारित तीव्र औद्योगीकरण ने मानव को गुलाम बना दिया है। जिससे एक तो मानव का शारीरिक एवं नैतिक पतन हुआ है, मानवीय समाज में आर्थिक सहयोग के स्थान पर आर्थिक प्रतियोगिता को प्रोत्साहन मिला है। गरीबी एवं बेरोजगारी में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।

स्वदेशी से अर्थ था – विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था, ग्राम और स्थानीय सामुदायिक विकास, सबको रोजगार और स्वावलम्बन। स्थानीय आत्मनिर्भरता और सहभागिता। गॉधीजी के अनुसार – ''जो वस्तु करोड़ों भारतीयों के हितों का संवर्द्धन करती हो, भले ही उसमें लगी पूंजी, व कौशल विदेशी हो, वह स्वदेशी है। 'यह पूंजी व कौशल भारतीय नियंत्रण के अधीन होना चाहिए।

गॉधी जी के लिए समाजवाद का आधार सबके लिए सामाजिक न्याय और अवसर की समानता का सिद्धांत है। यह एक नैतिक सिद्धांत है जो संयम, अहिंसा एवं विकेन्द्रीकरण पर आधारित है। वे पूंजी पर आधारित निर्भरता को समाप्त कर पूंजी निवेश के बदले श्रम निवेश को श्रेयस्कर मानते थे। गॉधीजी ने देश को सम्पन्न एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए अपनी आर्थिक नीति को यह आधार प्रदान किया था कि प्रत्येक उपभोक्ता उत्पादक हो और ग्रामोद्योग उसका माध्यम बने। गॉधी जी ने श्रम के महत्व को प्रतिपादित करते हुए ''रोटी का श्रम'' सिद्धांत प्रस्तुत किया जिसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं परिश्रम करके ईमानदारी से अपनी जीविका का उपार्जन करना चाहिए।

देश के विकास का प्रथम सूत्र गॉव को माना। उनके वृक्षारोपण, पशुपालन, मधुमक्खी पालन, कुटीर उद्योग, हस्तकला जैसे कृषि पर आधारित औद्योगिक विकास में पर्यावरण संरक्षण का स्पष्ट दर्शन होता है। प्रकृति के साथ संघर्ष की अपेक्षा सहयोग द्वारा जीवन और अधिक मूल्यवान बनाया जा सकता है।

निष्कर्ष

आज गॉधी जी का आर्थिक दर्शन एक कल्याणकारी सार्वभौमिक चिन्तन का स्वरूप ले चुका है। गॉधी जी की सर्वोदयी अहिंसावादी विचारधारा को मूल सुधार मानकर ही देश विदेश में व्याप्त प्रत्येक समस्या का स्थायी समाधान खोजा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि समृद्ध एवं शक्तिशाली भारत निर्माण के लिए गॉधी जी के समतावादी समाज की परिकल्पनाओं के अनुसार विकेन्द्रीकरण की आर्थिक नीति एवं पंचायती राज की स्थापना के लिए रचनात्मक दृष्टिकोण को वास्तविक मूर्त स्वरूप प्रदान किया जाए। इसका केन्द्र बिन्दु ग्रामीण भारत बनें।

भारतीय अर्थ व्यवस्था के लिए जो भी प्रयास नियोजन एवं विनियोग किए जा रहे है, वह सब निरर्थक एवं अर्थहीन होते जा रहे है। एक तरफ जहॉ गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, भूखमरी,, जनसंख्या वृद्धि, लिंग–असमानता, आय–असमानता आदि मूलभूत आर्थिक समस्याओं में तीव्र गति से वृद्धि जारी है, वहीं दूसरी तरफ विदेशी ऋणभार, कालाधन, व्यापार घाटा, आर्थिक भ्रष्टाचार आदि समस्याएं भारतीय आर्थिक ढांचे को और अधिक जर्जर करती जा रही है। एक ओर जहां संपन्नता एवं विपन्नता की खाई चौड़ी हो रही है, वहीं दूसरी ओर राजनैतिक, कार्यकुशलता एवं कर्मठता के अभाव में समृद्धिशाली कल्याणकारी योजनाएं असफल होती जा रही है। उपर्युक्त संपूर्ण समस्याओं के समाधान एवं अर्थव्यवस्था को तीव्रतर सकारात्मक आर्थिक विकास के सुमार्गो पर लाने में गॉधी जी द्वारा प्रतिपादित विचार भारतीय अर्थव्यवस्था को एक नया आयाम प्रदान कर सकते है।

काश! नियोजन प्रक्रिया को नीचे से प्रांरभ किया जाता। देश के स्थायित्वपूर्ण धनात्मक आर्थिक विकास की दिशा को निर्धारित करने के लिए नेहरूवादियों द्वारा अपनाई गई ''ट्रायल एण्ड एरर'' की नीति के स्थान पर गॉधी जी की ''मैन शुड बी दी सेण्टर ऑफ इकानामिक डवलपमेन्ट'' की आर्थिक नीति को स्वीकारा जाता।

नोबल पुरस्कार विजेता प्रो. गुन्नार मिर्डल के अनुसार '' गॉधीवादी केवल नैतिक आग्रह ही नहीं है बल्कि एक अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र भी है। जिसमें एक ओर तो आज की आर्थिक जीवन की अनगिनत समस्याओं तथा सामाजिक जीवन में व्याप्त अनेक जटिलताओं का सम्यक सन्निहित है, तो दूसरी ओर सुखद मानवीय भविष्य के लिए स्वतः स्फूर्त क्रांति की दिशा दृष्टि।'' गॉधीजी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक है जितने पहले थे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

योजना

1. *अक्टूबर 1998 – ग्राम पुनर्निर्माण का गॉधीवादी मॉडल–डॉ. अल्का अग्रवाल, पृ.क्र. 28*
2. *नवम्बर 2000 – संयुक्त वन प्रबंधन और गॉधी जी की ग्राम स्वराज की अवधारणा–विनय कुमार तिवारी, पृ.क्र. 23*
3. *अक्टूबर 2001 –*

(i) महात्मा गॉधी का आर्थिक दर्शन और पर्यावरण संरक्षण–अर्जुन प्रसाद सिंह, पृ.क्र. 26

(ii) गॉधी जी की अन्तर्दृष्टि – विकास प्रक्रिया–सुरेश चन्द्र राय, पृ.क्र. 28

4. *फरवरी 2002 – गॉधी ग्राम योजना – ग्रामीण विकास का अभिनव प्रयोग–पी. आर. त्रिवेदी, पृ.क्र. 32*
5. *अक्टूबर 2002 – महात्मा गॉधी और सामाजिक समता – निर्मला देशपाण्डे, पृ.क्र. 4*
6. *अक्टूबर 2004 – आर्थि विकास के गॉधीवादी मॉडल की प्रासंगिकता–मुकेश कुमार शर्मा, पृ.क्र.11*
7. *अक्टूबर 2017 – नवभारत और गॉधी के सपन–पंकज चौबे, पृ.क्र. 47*

कुरूक्षेत्र

1. जनवरी 2003 – योजनाओं में विकास का गॉधीवादी मॉडल, अपनाना हितकर–डॉ. रविशंकर जगुआर, पृ. क्र. 21
2. मार्च 2005 –गॉधीवादी अर्थव्यवस्था एक दृष्टि, डॉ. अशो कुमार पारख–उद्योग व्यापार पत्रिका, पृ.क्र. 29
3. अक्टूबर 2005–

(i) 73वॉ संवैधानिक संशोधन – गॉधी दर्शन के परिपेक्ष्य में–राजदुलारी माथुर, पृ.क्र. 67

(ii) गॉधी जी के ग्राम स्वराज की परिकल्पना–डॉ. अमरेन्द्र कुमार तिवारी, पृ.क्र. 70

4. अक्टूबर 2006 –

(i) वर्तमान समस्याएं और गॉधी जी की प्रासंगिकता–प्रांजल धर, पृ.क्र. 84

(ii) आधुनिक अर्थतंत्र एवं गॉधी जी–राजदुलारी माथुर, पृ. क्र. 92

5. अक्टूबर 2007 – गॉधीवाद का आर्थिक चिन्तन–बलकार सिंह पूनिया, पृ.क्र. 61
6. अक्टूबर 2009 –महिला अधिकारों के समर्थक – महात्मा गॉधी–धनंजय सहाय, समाज कल्याण पत्रिका, पृ.क्र. 12
7. अक्टूबर 2015 –

(i) खादी में रोजगार की संभावनाएं – ऋषभ कृष्ण सक्सेना, पृ.क्र. 5

(ii) महात्मा गॉधी और खादी – चंद्रभान यादव, पृ.क्र. 10

(iii) भारतीय समाज के संदर्भ में गॉधी चिन्तन – चैतन्य प्रकाश, पृ.क्र. 35

8. अक्टूबर 2016 –अर्थशात्री महात्मागांधी का खादी दर्शन–कुमार प्रशांत, पृ.क्र. 12

पुस्तकें

1. गॉधी दर्शन के विविध आयाम – प्रो. बी.एम. शर्मा, डॉ. रामकृष्णदत्त शर्मा, डॉ. सविता शर्मा

अंत टिप्पणी

1. *पवन कुमार अग्रवाल – गॉधी के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता, योजना, अक्टूबर 1998, पृ.क्र. 31*
2. *अमरनाथ दत्त गिरी – गॉधी जी का आर्थिक चिंतन – प्रासंगिकता और संभावनाएं, योजना, अक्टूबर 1999, पृ.क्र. 12*
3. *हरदयाल – वर्तमान संदर्भ में गॉधी जी, योजना, अक्टूबर 2004, पृ.क्र. 5*
4. *कन्हैया त्रिपाठी – गॉधी की आर्थिक दृष्टि, योजना, अक्टूबर 2008, पृ.क्र. 48*
5. *लक्ष्मीदास – गॉधी विचार से स्किल डवलपमेन्ट, योजना, अक्टूबर 2016, पृ.क्र. 36*
6. *होशियार सिंह – गॉधी जी की ग्राम स्वराज की अवधारणा, कुरूक्षेत्र, अक्टूबर 2006, पृ.क्र. 90*
7. *डॉ. रवीन्द्र कुमार – खादी और ग्रामीण पुनर्निर्माण – गॉधीवादी दृष्टिकोण, कुरूक्षेत्र, अक्टूबर 2018, पृ.क्र. 9*